अतीत की ओर...

प्रमिला

माँ से मातृभाषा तक...

वर्ष : 01, प्रवेशांक : 02, मार्च 2023

मूल्य : 20 रुपए | पृष्ठ : 4

ई – पत्रिका उपलब्ध है : www.rachnakosh.in

कुछ भी नहीं बचा है मेरे इख़्तियार में।
सब कुछ लुटा चुका हूँ तेरे इंतिज़ार में।

- प्रखर पुंज

'कहे के त सब कोई आपन...' भोजपुरी गीत के श्रृंगार 'चित्रगुप्त'

सरोज कु. मिश्रा (अनजाना)

" चित्रगुप्त नाम बा रस के फुहार के,
मधुर संगीत के झंकार के,
आपन भोजपुरिया माटी के बयार के,
सहज, सौभाविक, श्रृंगार के... "

एगो अइसन झंकार के जवन सदियों तक संगीत प्रेमी लोग के कान के राह से होके दिल में गुंजत रही। जीवन में पद प्रतिष्ठा पइसा तीनों के ठुकरा के एगो अच्छा खासा जिंदगी के दाव पर लगा के संगीत के जुनून में ज्ञान नगरी पटना के छोड़ के, उहाँ के माया नगरी बम्बई चल गइनी। आपन मेहनत लगन धैर्य के बल पर एगो बहुत ऊंचा मुकाम हासिल कईनी।

सुर, संगीत आऊर चित्रगुप्त, बिहार के रहे वाला एगो अद्भुत संगीतकार चित्रगुप्त जी। आज से सौ बरिस बाद भी अगर बिहार के सौ गो संगीतकार लोग के सूची उठा के देखल जाई त ओमे ई नाम सबसे ऊपर ज़रूर रही। इंहा के संगीत में अईसन खनक रहे जौना के सुन के ई अंदाजा न लागे कि एगो प्रेमिका के पायल खनक ता कि एगो तावयफ के दर्शक जब ले दृश्य न देखि तब ले ई पता ना चली, ई चित्रगुप्त जी के संगीत में एगो बड़का जादू रहे।

अइसन दिलकश गीतन के अपना संगीत से सजइला के बाद, भोजपुरी सिनेमा के जब पहिलका फ़िलिम बनल त ओकर सब गीत के संगीत से सजाये वाला चित्रगुप्त जी रनी। उ फ़िलिम के शीर्षक गीत हे गंगा मईया,,, ढेर मशहुर भइल। सोनवा के पिंजरा में बंद भईल,,, पुरस्कृत भइल। ओकरा बाद त भोजपुरी सिनेमा आगे बढ़त गइल। और ऊँहा के योगदान क़ायम रहल। कहे के त सब कोई आपन, आज भी ई गीत अमर बा।

चित्रगुप्त जी के दिहल संगीत:

1. कहे के त सभ केहु आपन
2. चल उड़ जा रे पंछी
3. ये देश हुआ बेगान
4. बात मानों साईंया बन जाओ हिंदुस्तानी
5. याद मेरी तुमको आती तो होगी

" लुक छिप बदरा में चमके जईसे
चनवा मोरा मुख दमके...
मोरी कुसमी रे चुनरिया इतर गमके... "

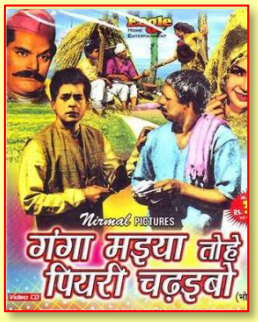

'छपरा' का एक इतिहास ऐसा भी...

स्नेहा यादव

टारी नाम सुनते ही सबसे पहला मन में चित्र यह उभरता है कि यह राजपूतों का गढ़ है। कह सकते हैं कि एक समय में टारी पर गुंडों का राज हुआ करता था। लोग वहां जाने के नाम से ही कतराते थे, या यूं कहें कि जाना ही नहीं चाहते थे। मुझे याद है जब मैं 10 -12 साल की थी, तब मेरे नाना जी कहा करते थे कि वहां पर लोग शाम 7 बजे के बाद जाना ही नहीं चाहते थे। ढ़ाला उस पार का नाम सुनते ही कोई भी रिक्शा चालक जाने के लिए सबसे पहले मना करता था। मुझे आज भी याद है जब मेरी मां कहा करती थी कि 1994 में जब हाउसिंग कॉलोनी में जमीन खरीदना था, तब लोग कहते थे कि यहां तो राक्षसों का वास होता है, कैसे रह पाओगी ?

लोग 7 बजे के बाद इधर देखते भी नहीं और तुम यहाँ जमीन खरीदने आई हो। मेरी मां बताती हैं कि जब तुम सब छोटे थे तो मेरे पापा बहुत हिम्मत करके लोगों को 12 बजे रात में इंजेक्शन देने जाया करते थे। कहा जाता है कि ढ़ाला उस पार यानी टारी का नाम सुनते ही लोगों में खौफ़ हो जाता था लोग कहते थे की ढाला उस पार ऐसे कई मर्डर किए हुए शव पुलिस ने बरामद किया है। शाम 7 बजे के बाद डकैतों का बोलबाला था। उधर पुलिस भी जाने से एक बार सोचा करती थी। इसलिए कोई भी उधर जाने से कतराता था।

फोटो साभार : शिवम कुमार

फोटो : छपरा टारी क्षेत्र

वैसे तो उस क्षेत्र में राजपूतों का बोलबाला था और आज भी है। टारी से कुछ दूर अन्दर एक गांव है, जहां आज भी राजपूताना बोलबाला है और लोग अपने आप को जमींदार समझते हैं और जमींदार की तरह रहते भी हैं। धीरे-धीरे उधर बस्ती बढ़ती गई और कई घर बनते गए। रास्तों का निर्माण किया गया, और धीरे-धीरे विकास की गति हुई।

लोगों के अंदर का भय खत्म हुआ। टारी के विषय में मेरे मामा जी कहते हैं कि ढ़ाला उस पार और ढ़ाला इस पार जाति विरोधी बोलबाला था। लोग ने जाति के आधार पर ढ़ाले को बांट दिया था। जब कभी ढ़ाला इस पार और उस पार के बीच किसी बात को लेकर विवाद होता तो लोग कहते कि म्यूनिसपल चौक आकर दिखाओ और उधर वाले लोग कहते इस पार आकर के दिखाओ। इस तरह की कई कहानियां हैं जो हर कोई अपने हिसाब से बताता है। कहा तो यह भी जाता है कि जगदम कॉलेज के बगल में जो एक छोटा सा पोखरा है, वहां पर कई लोगों को मार कर फेंक दिया गया है और पोखरा में शव को दबा भी दिया गया है। ऐसी कई कहानियां है,लेकिन अब धीरे-धीरे कहीं ना कहीं विकास की रफ्तार उस क्षेत्र में देखने को मिली, धीरे-धीरे अंतरजातीय बढ़ावा कम देखने को मिलता हैं।

अतीत की ओर...

इतिहास के पन्नों में अप्रैल महीना...

1721 : रॉबर्ट वाल्पोल ग्रेट ब्रिटेन के पहले प्रधान मंत्री बने।

1931 : संयुक्त राज्य अमेरिका में फुटबॉल फेडरेशन का गठन हुआ था।

मुगल काल से है छपरा की पहचान ...

शुभम कुमार

बिहार जिसका इतिहास भारत के मानचित्र पर स्वर्णिम बिन्दु की तरह है, जिसने हर समय मे भारत को नई दिशा दी है। बिहार के विकास और अर्थव्यवस्था पर बात करें और इसके परिपेक्ष में हमारा शहर एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। नदियों के नजदीक बसे इस जिले की पहचान बाकी जिलों से अलग है। बिहार की मिट्टी प्राचीन कल से फलदायी रही है और इसकी नदियों के रास्ते से होने वाले व्यापार इससे बहुत समय तक भारत में सबसे समृद्ध राज्य बनने मे सहायक रहा है। शहर से नजदीक डोरीगंज भी ऐतिहासिक जगहों मे से एक है। वहाँ पर लोग धार्मिक क्रियाकलाप में जाते हैं, जो कि शुभ माना जाता है।

कुछ ही दूरी पर एक जगह है चिराँद, जहां पर प्राचीन काल के मापक औजार है।

छपरा शहर के बीचों-बीच खनुआ नाला का इतिहास अंग्रेजों के समय से रहा है। पूर्व मे खनुआ नाला एक नहर था, जो कि मुगल काल में बनाया गया था। इसके निर्माण का श्रेय टोडरमल को जाता है, जो अकबर का वित्त मंत्री हुआ करता था। प्रचीन काल में इस नहर के रास्ते नाव के जरिए व्यापार हुआ करता था, जो तब के समय में छपरा की अर्थव्यवस्था को समृद्ध बनाया करता था। छपरा मध्यकालीन भारत के समय 'शोरा' (एक तरह का मिनरल है जो की बारूद बनाने के काम आता है) और अपने अनाज के गुणवत्ता के लिए जाना जाता था।

आगे जब ईस्ट इंडिया कंपनी की नज़र बिहार पर पड़ी तब उन्होंने राज्य को छः प्रांतों में बाँट दिया, जिसमें से सारण (छपरा) भी एक था। तब सिवान, गोपालगंज और चंपारण का कुछ क्षेत्र सारण का हिस्सा हुआ करता था। महत्वपूर्ण बात यह है कि यही वो दौर था जब अंग्रेजों ने शहर में सरकारी बाजार को स्थित किया और डिस्ट्रिक्ट कोर्ट और जेल भी बनाया।

रेखाचित्र : भाग 1

आर्टिस्ट का नाम :
रश्मि तिवारी (न्यू हाउसिंग कॉलोनी, छपरा)

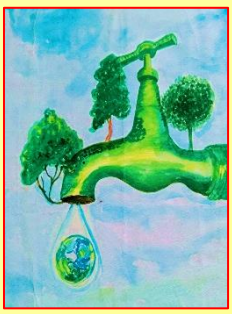

भोजपुरी विशेष : (ग़ज़ल)

बाँचल कुछऊ ना तोहार, ना हमार आपन
भूला गइल बा सभे कोई, किरदार आपन

दू गज के मऽकान मे रहे खातिर आदमी
बेंचे के तइयार गाँव के घर-बार आपन

हमरा के तऽ लोग बऊराह कहल, जे कहनी
इहाँ ना रोटी आपन, ना रोजगार आपन

का जाने कथी पऽ अतना गरभ करेला लोग
वोट दे देला से, ना हो जाले सरकार आपन
खोजत - खोजत पता जिनगी के किशोर,ढेर
आदमी से छूटल जा तावे दुआर आपन

- सोनू किशोर

रितेश आदर्श

गाँव में घर-घर बोरिंग होने लगा है। गांव की दहलीज तक पहुंचते ही एक बड़ी टंकी भी दिखाई पड़ती है। पानी सुलभ हुआ है या दुर्लभ यह सवाल फिर भी बना हुआ है। हम धरती के जितना नीचे गए, पानी उससे दुगुनी गति से नीचे भागा है। गांव का पूरा समीकरण ही बदला - बदला सा है।

फाइल फोटो

गाँव एक कदम आगे, दो कदम पीछे...

सड़कें बनी ताकि हम घरों को जोड़ सकें पर सड़कों ने हर घर से लड़कों को दूर पहुंचाने की साजिश कर डाली है। बदलते परिपेक्ष का सबसे ज्यादा असर हमारे गांव के परिवेश पर पड़ा है। विकास की सबसे बड़ी कीमत हमारे गांव ने चुकाई है।

फाइल फोटो

विकास अपनी शर्तों पर गांव तक पहुंचा है। स्कूल बिजली सड़क पानी, यह सब पहुंच गए। अस्पताल बने पर डॉक्टर और दवाइयों का क्या ? कचड़ा प्रबंधन का क्या ? ऐसे कई सवालों के जवाब गांव इन दिनों ढूंढ रहा है। बदलते आधारभूत ढांचे के साथ जल निकासी की गंभीर समस्या गांव में बढ़ी है। पक्के संरचनाओं की वजह से बारिश का पानी पहले की बजाय जमीन तक कम पहुंच रहा है। गंगा के समतल मैदान में कूड़े के पहाड़ गांव तक पहुंच गए हैं। गांव जो एक सुलझी हुई और सरल व्यवस्था थी, आज सबसे ज्यादा उलझ गई है। इसे सुलझाने को हमें ठोस प्रयास करने होंगे।

अतीत की ओर...

इतिहास के पन्नों में अप्रैल महीना...

1949 : टोक्यो स्टॉक एक्सचेंज की स्थापना हुई।

2009 : स्वीडन में समलैंगिक विवाह को मान्यता दी गई।

सन्नी पाठक (बिहार पुलिस)

जिनकी अस्थियों से बना वज्र और धनुष्य...

यूँ तो भारतीय इतिहास में कई दानी हुए हैं, किंतु मानव कल्याण के लिए अपनी अस्थियों का दान करने वाले मात्र महर्षि दधीचि ही थे। देवलोक पर वृत्रासुर नामक राक्षस का अत्याचार दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहा था। वे देवताओं को अक्सर परेशान करते रहता था। अन्ततः देवराज इन्द्र को इन्द्रलोक की रक्षा, देवलोक व देवताओं की भलाई और अपने सिंहासन को बचाने के लिए वे देवताओं सहित अपनी व्यथा को लेकर ब्रह्मा, विष्णु व महेश के पास गए।

लेकिन कोई भी उनकी समस्या का निदान न कर सका। बाद में ब्रह्मा जी ने देवताओं को एक उपाय बताया कि पृथ्वी लोक में दधीचि नाम के एक महर्षि रहते हैं। यदि वे अपनी अस्थियों का दान कर दें तो उनकी अस्थियों से एक वज्र बनाया जा सकता है। उस वज्र से वृत्रासुर मारा जाएगा। क्योंकि वृत्रासुर को किसी भी अस्त्र-शस्त्र से नहीं मारा जा सकता। महर्षि दधीचि की अस्थियों में ही वह ब्रह्म तेज है, जिससे वृत्रासुर राक्षस मारा जा सकता है। इसके अतिरिक्त और कोई दूसरा उपाय नहीं है।

देवराज इंद्र तुरंत महर्षि के आश्रम पहुँचे। महर्षि दधीचि ने देवराज इन्द्र एवं उनके आश्रम मे उपस्थित सभी देवो को सम्मान दिया तथा आश्रम आने का कारण पूछा। इन्द्र ने महर्षि को अपनी व्यथा सुनाई तो दधीचि ने कहा कि मैं देवलोक की रक्षा के लिए क्या कर सकता हूँ ? सभी देवताओं ने मिलकर उन्हें ब्रह्मा, विष्णु व महेश की कहीं बातें बताईं तथा उनकी अस्थियों का दान माँगा। महर्षि दधीचि ने बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी अस्थियों का दान देना स्वीकार कर लिया।

उन्होंने समाधी लगाई और अपनी देह का त्याग कर दिया। उस समय उनकी पत्नी आश्रम में उपस्थित नहीं थी। अब देवताओं के समक्ष ये समस्या आई कि महर्षि दधीचि के शरीर से माँस को कैसे उतारा जाए। तब देवराज इन्द्र ने कामधेनु गाय को बुलाया और उसे महर्षि के शरीर से मांस उतारने को कहा। कामधेनु ने अपनी जीभ से चाट-चाटकर महर्षि के शरीर का माँस उतार दिया। अब केवल अस्थियों का पंजर रह गया था। तभी महर्षि की पत्नी वहाँ आईं और ये नजारा देखकर उन्होंने सती होने का निर्णय लिया। तभी देवताओ ने देखा कि उनकी कोख मे संतान है, तो देवताओं ने मिलकर युक्ति लगाई और उनके देह त्याग करने से पूर्व ही गर्भ को पीपल को सौंप दिया। जिस कारण जब बालक का जन्म हुआ तो उसका नाम पिप्पलाद हुआ था।

महर्षि दधीचि के अस्थियों से एक वज्र एवं तीन धनुष बने। जिससे वृत्रासुर राक्षस का वध हुआ। महर्षि दधीचि मुनि का आश्रम सारण के छपरा मे स्थित है जो उमानाथ मंदिर के नाम से विख्यात है। इस प्राचीन धरोहर का देख रेख वहाँ के निजी निवासीयो एवं श्रद्धालु के द्वारा की जाती है। इस प्राचीन धरोहर पर सरकार द्वारा किसी प्रकार का कोई सहयोग अब तक नहीं किया गया।

भोजपुरी विशेष

भोजपुरी गीत : लोग भुला गईल...

माटी के खाटी सुगन्ध कइसे लोग भूला गइल
अश्लीलता के दाग भोजपुरी आँचर पर लगा गईल

सिलवट लोढा ओखल मूसल बेढी केने दबा गइल
दादी काकी के कथा लोरी ना जाने कहाँ गइल
सांझा पाराती गीत गवनई पनघट भी ओरा गइल
माटी के खाटी सुगन्ध कइसे लोग भुला गइल

गउँवा जब अपना के खोजे पावे नाही गाँव मे
संझिया के हरियरी के बोझा हेलत नइखे नाव में
नदिया जब नाला बनल अनजाना देख डेरा गइल
माटी के खाटी सुगंध कइसे लोग भुला गइल

- अनजाना

भासा ह बिकास के धूरी
रोटी में जइसे तंदूरी...

माई के ममता में सउनल
भाव के भासा ह भोजपुरी॥

- डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन'

भोजपुरी गीत : 'मन सहरे से जब अगुताई'

मन सहरे से जब अगुताई ए भाई
गउवां - जवार इयाद आई।
इयाद आई जहिया ई खेत – खरिहनवा
गोहुआं के बलिया के टुंगत सुगनवा।
बउराइल घन अमराई ए भाई
गउवां - जवार इयाद आई...

कुहुकि कोइलिया पपिहरा जब बोली
इयाद आई जहिया दिवाली आ होली
जब पुरवइया अंचरा ओढ़ाई ए भाई
गउवां - जवार इयाद आई ...

रितिया - पिरितिया के पतिया जे बांची
घेरी बदरिया त मोरवा जो नाची
तब सावन अगिनिया लगाई ए भाई
गउवां - जवार इयाद आई

माई के जहिया सताई सनेहिया
इयाद आई घुघुआ खेलावत ऊ देहिया।
माई लोरिये से निनिया बोलाई ए भाई
गउवां - जवार इयाद आई

पइसा कमाये बदे गइले बिदेसवा
छोड़ि के पराया भइलऽ आपन ई देसवा
गीत 'गुंजन' के जब - जब सुनाई ए भाई
गउवां - जवार इयाद आई...

मन सहरे से जब अगुताई,
ए भाईगउवां - जवार इयाद आई.....

- डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन'

शायरी (भोजपुरी)

नेहिया के बझायल आंगन में
फूल खिलत नईख,
आपन से आपन केहू
खुशी से मिलत नईखे,

रहे तमन्ना के होके
जइति कमयाब घरे,
कैसे बताई की केन्हु
रोज़गार मिलत नईखे...

- अनीश कुमार 'देव'

फलनवा - चिलनवा के साथ
का करीं,
नीक रहन ना रहीं त जाति का
करीं,
कुल में कुपातर जनम जइहें
जो,
त पुरखन के जोगवल जजात
का करीं ॥

- डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन'

साहित्य मासिक

घनश्याम

श्याम से सावन तक...

वर्ष : 01, प्रवेशांक : 02, मार्च 2023

जब सतायेगा शहर तो गाँव याद आएगा।
ये खेत और ये पेड़ का छाँव याद आएगा।।

- अलबेला

मूल्य : 20 रुपए

ई – पत्रिका उपलब्ध है : www.rachnakosh.in

केक्टस

तहजीब, अदब, सलीका
मुझे नहीं आते।

मैंने कभी सीखे ही नहीं।
न उठने के , न बैठने के

न खाने के न हसँने के।
तो कभी कभी कुछ ऐसे लोगों से मिलकर

मुझे ऐसा महसूस होता है
जैसे उनके गुलाब के गमले में

मैं केक्टस का लगा एक पौधा हूँ।
जहाँ कांटे तो उनमें भी हैं
पर मुझसे थोड़ा कम।

- श्वेता सिन्हा

मेरी कल्पना

इक रोज खिड़कियां थी खोली,
खिल खिलता चाँद देखा, खिल खिला के हँस परे
उस रोज देखा था मैंने, पहार भी थे हँस रहें
हँस रही थी रात ये, चाँदनी के बरात में।

सामने था चेहरा ईक खिल - खिलाती रात में,
आवाज में थी जादू उसके,दमक रही शृंगार से
'प्रेम' को पुकारती थी वो प्रेम के ही तान - बयान से...

इक रोज खिड़कियां थी खोली...

बीच मँझदार में थी नैया उसकी फंसी परी ,
खड़ी थी वो 'तृषाणी' प्रेम के मायाजाल में,
आशा से थी भड़ी परी वी खोजती खेवहार के,
उन्माद दे रहा था !

योवन उसका नीले - नीले आसमान में,

छोरा भी गया ना मुझसे उसे, उसी के हाल पे ,
अंगराई ले रहा था मैं, इकछावस से,
जब गया तो देखा - देखा परस्पर था कोई नहीं वहाँ,

आया न कोई मेरी पुकार से...

निष्कर्ष पे मैं आया तो,
तो देखा मैंने उसको, चेतना के अंतर्ध्यान से
थी कल्पना वो मेरी या में जुड़ गया था,
अपने होने वाले यार से... ।

- प्रेम शंकर

हौसला तू दिखा...

क्या तू हार गया, एक हार से,
क्या विश्वास ना था मेहनत के सिंगर पे
चल उठ अपने सोला को जगा
फिर मौका बना तू आगे आ

क्या तू रुक गया, एक चौट के वार से,
क्या विश्वास ना था ताकत के तार पे
चल चोट को हिम्मत बना
फिर मौका बना तू आगे आ

क्या तू थक गया, संघर्ष के राह से,
क्या विश्वास ना था, धैर्य के दीवार पे
चल संघर्ष को आनंद बना,
फिर मौका बना तू आगे आ

क्या तू डर गया संकट के प्रहार से
क्या विश्वास ना था समय के बदलाव पे
चल संकट को चुनौती बना ,
फिर मौका बना तू आगे आ

ना तु कदम पीछे हटा , ना तू डर को आगे ला
तेरा समय आएगा बन्दे, एक बार हौसला तू दिखा

- विक्की सोनी

जो कभी न थी...

जो कभी न थी,
फ़ज़ाओं के खिले बांकपन में,
अपनी भावनाओं को समेटे
एक श्वास जीवन बन कर बैठी थी!

फिर तुम आये;
मुझे जगाया,
ज्योति उकसायी
और अंतर्मन का कमल खिला गये।
मै फूलों सी महकी, चिड़ियों सी चहकी
एक तसव्वर जीवन पाकर
झिलमिल सितारों सी बिखरी।
हम कई बार मिले, साथ घूमे
तेरी याद मे प्रार्थना भी की,

फिर तुमने सब कुछ खत्म कर दियामेरे
सारे अरमानों पर राख जमा दी।
फिर भी तेरे आमंत्रण पर खुश थी-
सोचा था, चलो मेरा अस्तित्व तो है।
पर अफसोस; तुमने मुझे दुत्कार दिया
मेरे चाहत की तुलना कर दी।

क्योकि ; आज तुम्हारा किसी से प्रेम हुआ
और मेरा प्रेम छिन्न हो गया
जो कभी न थी- एक कविता
जो कभी न थी- एक दीप्ति!

- पंकज प्रेरक

नारी...

नारी, माँ का प्यार, पिता का सम्मान है।
नारी, बड़ों का दुलार, भाई का अभिमान है।।

नारी, देवताओं की सबसे सुंदर रचना है।
नारी, पवित्र यज्ञ की पूजा और अर्चना है।।

नारी, जग का मूल, सृष्टि का आधार है।
नारी, करुणा का सागर, धैर्य का पहाड़ है।।

नारी, पवित्रता की अग्नि परीक्षा देने वाली, सीता है।
नारी, कौरवों का काल, द्रौपदी की अस्मिता है।।

नारी, विष का प्याला पीने वाली, मीरा की भक्ति है।
नारी, प्राण पति की वापस लाने वाली, सावित्री की शक्ति है।।

नारी, गीता की ज्ञान, पद्मावती की आन है।
नारी, लक्ष्मीबाई की तलवार, कल्पना की उड़ान है।

नारी, प्रेम है। श्रृंगार है। ममता है।
नारी, संस्कृति है। संस्कार है। सभ्यता है।

नारी, त्याग है। तपस्या है। दान है।
नारी, लज्जा है। क्षमा है। महान है।।

- अनिरंजन सिंह

प्रधान संपादक : अभिनंदन द्विवेदी | सहायक संपादक : शुभम कुमार, अभिनंदन पाण्डेय, आकाश उपाध्याय, आकर्ष मिश्रा, रवि रंजन, चित्रांश श्रीवास्तव |
संपादक मंडल : विक्की कुमार, कुलदीप तिवारी, शिवम, कुश श्रीवास्तव, अंकित शर्मा | संपादकीय कार्यालय : पिठौरी, बनियापुर, सारण – 841301, बिहार